समलैंगिकता की मांग

देश मानसिक दिवालियेपन की ओर

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

देश मानसिक दिवालियेपन की ओर

इस समय देश के सर्वोच्च न्यायालय में इस बात पर बहस चल रही है कि समलैंगिक सम्बन्धों को अपराध की श्रेणी में माना जाए अथवा इस श्रेणी से बाहर निकाल कर ऐसे दुराचारी लोगों को स्वच्छन्दता प्रदान की जाए? जब मैं प्राचीन काल में विश्वगुरु एवं चक्रवर्ती राष्ट्र रहे, अपने इस राष्ट्र के अतीत को स्मरण करता हूँ, तो प्रतीत होता है कि आज अपना वह आर्यावर्त (भारत) मर चुका है।

इस अपने भारत के विषय में जानने हेतु मैं एक ही उदाहरण प्रस्तुत करना पर्याप्त समझता हूँ-

अयोध्यानरेश महाराजा दशरथ के राज्य में नागरिकों के विषय में महर्षि वाल्मीकि ने लिखा है-

"नाल्पसंनिचयः
कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान् न च नास्तिकः"
सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः।
मुदिताः शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः।।
नानाहिताग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः।
कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृत्तो न संकरः"।।

(वा. रामा. बालक 6|8, 9)

अर्थात् अयोध्या राज्य में सभी नागरिक अति समृद्ध थे। कोई महिला वा पुरुष न तो कामी था, न कंजूस, न क्रूर था। कोई ऐसा नागरिक नहीं था, जो सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान में पारंगत न हो, कोई नास्तिक नहीं था। सभी नर-नारी धर्मपरायण, जितेन्द्रिय, प्रसन्न, शील व सदाचार की दृष्टि से ऋषियों के समान पवित्र थे। सभी नित्य यज्ञ, ईश्वरोपासना व परोपकार करने वाले, अतिथियों व मूक प्राणियों का पोषण करने वाले थे। कोई भी संकुचित दृष्टिवाला, चोर तथा सदाचारशून्य व वर्णसंकर अर्थात् अपने वर्ण के अनुकूल योग्यता व आचरण से भ्रष्ट नहीं था।

इन्हीं के पुत्र मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का राज्य तो विश्वविख्यात है। उनके राज्य में ये सभी गुण तो सभी नागरिकों में थे ही, इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएं भी महर्षि वाल्मीकि ने दर्शायी हैं। वे संक्षेप में इस प्रकार है-

"न पर्यदेवन् विधवा न च व्यालकृतं भयम्।

न व्याधिजं भयं चासीद् रामे राज्यं प्रशासति।। 98।
न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणिकुर्वते।।99।।
नित्यमूला नित्यफलस्तरवस्तत्र पुष्पिताः।
कामवर्षी च पर्जन्यः सुखस्पर्शश्च मारुतः"।।102।।

अर्थात् श्रीराम के राज्य में कोई स्त्री विधवा नहीं होती थी, न विषैले जन्तुओं का भय था, न रोग का भय किसी को होता था। अल्पायु में किसी की मृत्यु नहीं होती थी, वृक्ष दीर्घायु तक फल व फूलों से युक्त रहते, इच्छानुसार वर्षा होती थी तथा वायु सुखद ही होकर बहती थी अर्थात् कहीं कोई प्राकृतिक प्रकोप भी नहीं होता था।

इस राष्ट्र एवं विश्व के नदीतटों, पर्वत शिखरों व गुफाओं में महान् तपोधन महर्षि लोग तप-साधना करते थे, प्रत्येक परिवार में वेदध्वनि गूंजती व यज्ञों की सुगन्ध सबको आनन्दित करती। सभी कर्मानुसार निर्धारित सभी वर्ण परस्पर सदाचार व प्रेमपूर्वक रहते थे। राष्ट्र विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली परन्तु सभी राष्ट्रों का संरक्षक, विश्वगुरु, सर्वाधिक समृद्ध एवं सदाचार में शीर्ष था। महाभारत काल में काफी पतन होते हुए भी वर्तमान की अपेक्षा सैकड़ों गुना श्रेष्ठ, समृद्ध, बलवान् व ज्ञान-विज्ञान से सम्पन था।

इस राष्ट्र एवं इस भरतखण्ड में भगवत्पाद महर्षिगणों व देवों में ब्रह्मा, महादेव, विष्णु, इन्द्र, नारद, बृहस्पति, सनत्कुमार, मनु, भृगु, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, अगस्त्य, भरद्वाज, परशुराम, याज्ञवल्क्य, ऐतरेय महीदास, मार्कण्डेय, वेदव्यास, कपिल, कणाद, पतंजलि, यास्क, जैमिनि, गोतम, पाणिनि, दयानन्द जैसे अनेक महामानवों ने जन्म लिया, वहीं मरीचि, इक्ष्वाकु मान्धाता, पृथु, हरिश्चन्द्र, राम, लक्ष्मण, कृष्ण, हनुमान्, दुष्यन्त पुत्र भरत, अर्जुन, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, समुद्रगुप्त, शिवा, प्रताप आदि अनेकों राजपुरुषों अथवा राष्ट्र निर्माताओं ने जन्म लिया। इस देश में भगवती उमा, उर्मिला, सावित्री, अनसूया, लोपामुद्रा, गार्गी, अपाला, घोषा, रुक्मिणी, जीजाबाई, पद्मिनी, दुर्गावती, पन्नाधाय, लक्ष्मी बाई जैसी पूज्या नारियों ने जन्म लिया। इन सबके चरित्र कितने पवित्र और उच्च थे, इसकी कल्पना भी आज का घमंडी एवं पाश्चात्य का बौद्धिक दास नहीं कर सकता है। इनके ज्ञान-विज्ञान का स्तर भी आज कल्पना की सीमा से बाहर है।

मेरे देशवासियो! सौभाग्य से हम ऐसे महान् देश में जन्मे परन्तु आज वही देश सर्वत्र दुराचार, लम्पटता, भ्रष्टाचार, चोरी, आगजनी, रिश्वतखोरी, मिथ्यापन, छल-कपट, ईर्ष्या, वैर, द्वेष, क्रूरता, हिंसा, निर्धनता, अज्ञान, अन्याय, प्राकृतिक प्रकोप, नशावृत्ति, वैश्यावृत्ति आदि अनेक अकथनीय पापों के सागर में डूबा है। कभी यहाँ के सन्त पूर्ण जितेन्द्रिय व अपरिग्रही अर्थात् धन संग्रह की वृत्ति से सर्वथा दूर रहने वाले महाविद्वान् होते थे, वहीं आज के सन्त

महिलाओं के साथ रंगरेलियां मनाते, उन्हें शिष्याएं बनाते व खरबोंपति बन रहे हैं। दुराचार में लिप्त हो रहे हैं, कई जेलों में बन्द हैं, तब नेताओं, कथित प्रबुद्धों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं वास्तव में स्वाभिमान व राष्ट्रप्रेम की दृष्टि से दीन-दरिद्र व बौद्धिक दृष्टि से विदेशों के दासों, कथित मानवाधिकारियों व कामलिप्सा में प्रतिक्षण डूबी युवापीढ़ी को क्या कहें? **जब अनेक साधु, ब्रह्मचारी, संन्यासी भी भ्रष्ट हो रहे हैं, तब कुछ लोगों को समलैंगिकता की निर्लज्ज मांग करने पर किसे आश्चर्य होगा? वस्तुतः मेरा भारत तो मर चुका है अब मैकाले का इण्डिया उस मरे हुए भारत के शव पर खड़े होकर निर्मम अट्टहास कर रहा है। सच्चे भारतीय कम ही बचे होंगे, यदि सच्चे भारतीय अधिक संख्या में यहाँ होते, तो समलैंगिता के पाप को वैधानिक मान्यता दिलाने की मांग के विरुद्ध देश में आन्दोलन कर रहे होते।** परन्तु मैं देख रहा हूँ कि सभी शान्त हैं। अनेक लोग मन से इसके पक्ष में होंगे और बाहर से दिखाने के लिए इस पाप का विरोध करेंगे। कुछ सज्जन हैं, तो वे निष्क्रिय व निराश होकर अपने घर बैठे हैं। सम्भवतः यह बात केन्द्र सरकार भी जानती है, इस कारण उसने भी धृतराष्ट्र बनने में ही अपनी शान समझ ली अथवा स्वयं को विवश मान कर सब कुछ न्यायालय पर छोड़ दिया।

आज मीडिया में अनेक व्यक्ति इस कुकर्म के पक्षधर नाना प्रकार के मिथ्या तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं, **वे ऐसे महानुभाव इस इण्डिया में बड़े व्यक्ति माने जाते हैं, जबकि यदि भारत जीवित होता, तो इनकी दशा क्या होती, यह कहना आवश्यक नहीं।** मैं ऐसे दीनहीन बौद्धिक दासों के सभी मिथ्या तर्कों की परीक्षा करता हूँ-

1. यौन सम्बन्धों की स्वतंत्रता मानवाधिकार है।

समीक्षा- मैं सर्वप्रथम तो यह पूछता हूँ कि मानवाधिकार किसे कहते हैं? अपराधी का मुख ढक कर रखो, जिससे उसको समाज में निन्दा का पात्र न बनना पड़े। अपराधी को सार्वजनिक कड़ा दण्ड न दो। इसका अर्थ अपराधी का अधिकार है कि वह अपराध करते हुए भी निन्दा व अपमान का पात्र न बने। यह मानवाधिकार सभी अपराधियों यहाँ तक कि आतंकवादियों को ही मानव समझता है, जिनके मान-सम्मान के लिए सदैव यह चिन्तित रहता है। शायद अपराधियों के अपराध से ग्रस्त सज्जनों को कोई मानव समझता ही नहीं है।

2. समलैंगिकों को समाज में अपमान सहना पड़ता है।

समीक्षा- अपमान तो चोर, डाकू, बलात्कारियों, जुआरियों, हत्यारों को भी सहना पड़ता है और यदि ऐसा नहीं है, तो ऐसे समाज को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है, जहाँ चोर, लुटेरों, बलात्कारियों को सम्मान मिलता हो। वैसे

सच्चाई यह है कि आज राष्ट्र में ऐसे ही भ्रष्ट व दुराचारी लोग ही अपने धनबल, बाहुबल, जनबल व राजनैतिक बल के आधार पर प्रतिष्ठा पाते हैं। इस कारण इनके अधिकारों की मानवाधिकारवादियों को उतनी चिन्ता नहीं है, जितनी कि समलैंगिकों की। जिस दिन इन लोगों के साथ समाज में भेदभाव हो जायेगा, उस दिन न्यायालय में चोरी, बलात्कार, डकैती, जुआ व हत्या को भी अपराधमुक्त करने की मांग अवश्य उठेगी।

३. समलैंगिकता पारस्परिक सहमति पर आधारित हो, तभी वह अपराध की श्रेणी में नहीं आयेगी, जैसे कि वर्तमान में 'लिव इन रिलेशन' कोई अपराध नहीं है, जबकि बिना इच्छा के दोनों ही अपराध हैं।

समीक्षा– दुर्भाग्य से 'लिव इन रिलेशन' का पाप पाश्चात्य कुसभ्यता दासों की मानसिकता का परिणाम है। यह दासता आज इण्डिया के कथित बुद्धिजीवियों की पहचान बन गयी है। भारत में ऐसे पापों के लिए कोई स्थान नहीं था, बल्कि ऐसे सम्बन्ध बनाने वाले स्त्री-पुरुषों दोनों के लिए सार्वजनिक मृत्युदण्ड का विधान था। जब सर्वोच्च न्यायालय में इस पर बहस चल रही थी, उस समय कोर्ट ने श्रीकृष्ण-राधा का उदाहरण देकर इसे वैध धोषित किया था। उस समय 'राधारमण हर गोविन्द जय' पर झूमने वाले रसिक कथावाचकों की बोलती बन्द थी। वे अपनी पत्नी, पुत्र वा माता को ऐसे सम्बंधों की अनुमति नहीं दे सकते और न देनी चाहिए परन्तु राधा नाम आते ही उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। तो कोई 'समरथ को नहिं दोष' कहकर पल्ला झाड़ देता है। परन्तु कोई भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण के निम्नलिखित कथन पर विचार नहीं करता–

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तर तत्तदेवेतरोजनः
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकास्तनुवर्तते'।।

अर्थात् समाज श्रेष्ठ लोगों के आचरण का अनुसरण करता है। मैं राधा-कृष्ण का सम्बंध बताने वालों से स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि प्रचलित पुराणों की पापकथाओं के कारण ही आज कोर्ट ऐसे पापों को मान्यता दे रहा है। 'लिव इन रिलेशन' ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के पाप का परिणाम है।

जहाँ तक पारस्परिक सहमति का प्रश्न है, तब दो व्यक्ति व स्त्री-पुरुष पारस्परिक सहमत होकर नगर के चौराहों पर यौन क्रीड़ा करने की अनुमति मांगें, तो क्या स्वतंत्रता के पक्षधर उनकी मांग को वैध बताएंगे? क्या एक दुःखी व्यक्ति दूसरे से अपनी हत्या कराने का आग्रह करे, तो क्या उसे ऐसा करने की अनुमति वैध होगी? यदि नहीं, तो क्यों? ये भी दोनों सहमत हैं। जूआ सभी परस्पर सहमत होकर ही खेलते हैं, तब उन्हें उसकी स्वतंत्रता क्यों नहीं? रिश्वत का लेन-देन भी परस्पर सहमति से होता है, तब वह अपराध क्यों?

अनेक प्रकार के नशे अपराध की श्रेणी में क्यों हैं? उन्हें नशा करके आनन्द मनाने की छूट क्यों नहीं? नशीलें पदार्थों की तस्करी बेचने व खरीदने दोनों की पारस्परिक सहमति से होती है, तब यह अपराध क्यों?

4. कुछ महाशय समलैंगिकता को शिखण्डी से जोड़ रहे हैं।

समीक्षा– मैं नहीं समझता कि इन कथित प्रबुद्धों ने महाभारत ग्रन्थ को ध्यान से पढ़ा भी होगा? शिखण्डी एक महारथी योद्धा था। उसके विषय में भीष्म पितामह ने केवल इतना कहा है कि वह पूर्व में स्त्री था, इससे संकेत मिलता है कि वह या तो पूर्व जन्म में स्त्री था अथवा उसने लिंग परिवर्तन कराया था। इन दोनों ही बातों से उसका समलैंगिकता से क्या सम्बंध? ऐसे कुतर्की लोगों की मानसिकता को धिक्कार है। सम्पूर्ण महाभारत में ऐसा कहीं संकेत नहीं है। हां, भागवत, ब्रह्मवैवर्त्त पुराणादि में अनेक पापों की कथा अवश्य है। **दुर्भाग्य से हिन्दू समाज इन ग्रन्थों को ही सीने से चिपकाये है। वेद उपनिषद् दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थों, शुद्ध मनुस्मृति, शुद्ध महाभारत, शुद्ध रामायण, सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका जैसे ग्रन्थों से उसे कोई लगाव नहीं है।** मेरा सभी हिन्दू धर्माचार्यों से विनम्र अनुरोध है कि वे इन प्रचलित पुराणों, जिनमें से कोई भी महर्षि वेदव्यास जी की रचना नहीं है, का बहिष्कार करके विशुद्ध वेदमत को ही अपनाएं। अपने दुराग्रह छोड़ने का समय आ गया है। मैं समस्त हिन्दू समाज को सचेत कर रहा हूँ कि इन ग्रन्थों का सन्दर्भ देकर भविष्य में अनेक पापों को वैधता प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा जैसे- चोरी, जूआ, पुत्री के साथ पिता का यौन सम्बंध, पशु का मनुष्य से यौन सम्बंध, गोहत्या व गोमांसभक्षण, नरबलि आदि, तब आप क्या ऐसे ही मौन बने रहेंगे, जैसे आज बैठे हैं और **'लिव इन रिलेशन' का कानून भारतीय संस्कृति व सभ्यता को छलनी कर रहा है और सभी हिन्दू धर्माचार्य, हिन्दूराष्ट्र के उद्घोषक मौन हैं। अरे! कुछ तो बोलो! क्या यही हिन्दू राष्ट्र का विधान होगा?**

5. समलैंगिकता एक प्राचीन परम्परा है, इस कारण इसे अपराध नहीं मानना चाहिये।

समीक्षा– यह पुरानी परम्परा कदापि नहीं है। सम्भव है मध्य काल में विदेशियों के सम्पर्क में आने, उनके शासन में रहने पर ये पाप इस देश के कुछ मूर्ख लोगों ने भी सीख लिए हों पुरानी परम्परा तो है, ब्रह्मचर्य व संयम की परम्परा, जो कोई अपना सके, तो अपना ले अन्यथा विदेशियों की दासता के नर्क ही स्वर्ग मानता रहे। फिर भी इसे सैकड़ों वर्ष पुरानी कहें, तो कहूंगा कि चोरी करना भी बहुत पुरानी परम्परा है। त्रेता में रावण जैसा योद्धा व विद्वान् भी चोरी से सीताजी का हरण कर ले गया, तब क्या इसे भी मान्यता दे दी जाए?

राक्षस वर्ग के मनुष्य अन्य मनुष्यों को भी मारकर खा लेते थे, बड़े धर्मात्मा माने जाने वाले राजा भी जूआ खेलते थे, तब क्या चोरी, स्त्रीहरण व जूआ को अपराध न मानें? परम्परा पुरानी हो वा नवीन, इससे गुण-दोष का ज्ञान नहीं होता, बल्कि वह परम्परा कितनी आदर्श, विज्ञानसम्मत व वेदानुकूल है तथा समूची मानवता ही नहीं, अपितु प्राणिमात्र के व्यापक हित में है? यह विचार करके ही परम्परा को श्रेष्ठ व अनुकरणीय माना जा सकता है। दुर्भाग्य से इन कथित प्रबुद्धों व स्वतंत्रता के पुजारियों को भारत की कोई अच्छी परम्परा स्मरण नहीं है। उन्हें इस लेख में दर्शाये आदर्शों का अनुकरण करने का साहस अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए।

6. समलैंगिकता अप्राकृतिक व अवैज्ञानिक नहीं है, क्योंकि कुछ पशुओं में भी ऐसा देखा गया है।

समीक्षा- क्या कोई समलैंगिक बताएगा कि उसने कितने पशु पक्षियों को ऐसा करते देखा है? जिन घरेलू पशुओं को मनुष्य रात-दिन देखता है, क्या उनमें कोई ऐसा दिखता है? यदि कभी किसी रोगी पशु में ऐसा किसी ने देख भी लिया हो, तो वह इन कथित स्वच्छन्दों के लिए आदर्श बन गया। अरे! महाशय! पशु तो बहुत मर्यादित होते हैं। बिना ऋतुकाल के कोई नरपशु-पक्षी मादा के पास जाता भी नहीं। यदि साहस है, तो इनसे यह सीख लो। फिर यदि आपको उनसे यह न सीख कर गलत ही सीखना है, तो क्या पशुओं की तरह मादाओं के पीछे भागना, उनके लिए नरों का रक्तरंजित संघर्ष, खुले में निर्लज्ज यौन क्रीड़ा, बलवान् द्वारा दुर्बल को मार डालना आदि कर्मों की वैधानिकता को भी सर्वोच्च न्यायालय मांगेंगे? इस समय सब लूटो, जो भी पाप लूटना है, सबके लिए संघर्ष करो, रैलियां करो, धरने-प्रदर्शन करो, क्योंकि अब स्वतंत्र भारत नहीं बल्कि स्वच्छन्द इण्डिया का लोकतंत्र (भीड़तंत्र) है। और सबके सिर पाश्चात्य की दासता रंग दिखा रही है। इस सभी दासों को मैं पूछता हूँ कि शरीर में यौन सम्बंध के लिए जननांगों के अतिरिक्त कौन अन्य अंग विज्ञान के अनुकूल है? शोक है इन मूर्खों की विषयलम्पटता पर।

7. समलैंगिकता से चोरी छिपे करोड़ों बच्चे व बड़े ग्रस्त ही हैं, फिर क्यों न इसे अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया जाए, जिससे करोड़ों लोग भय व लज्जा का जीवन जीने को बाध्य न हों।

समीक्षा- इस देश में अनेक पाप चोरी छिपे ही होते हैं, यथा- चोरी, रिश्वतखोरी, वस्तुओं में मिलावट, तस्करी, मिथ्या छल-कपट, नरबलि, पशुबलि, कुछ प्रकार के नशे आदि। इन्हें करने वाले भी डरे-सहमे ये कुकृत्य करते हैं। तब इन्हें

भी क्यों न अपराध की श्रेणी से मुक्त कर दिया जाए, जिससे इन पापों को करने वाले भी चैन की सांस ले सकें। बोलो, क्या यही न्याय है?

इन सभी कुतर्कों का उत्तर देने के उपरान्त मैं **अपने सभी देशवासियों, जिन्हें इस देश की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व ज्ञान-विज्ञान से घृणा है तथा जिन्हें विदेशी दासता ही प्रगतिशीलता की परिचायिकता प्रतीत होती है, से कहना चाहूंगा कि ऐसा कोई भी कथित प्रबुद्ध, जो स्वयं को बड़ा ज्ञानी, विज्ञानी व सभ्य मानता हो, मेरे पास आकर प्रीतिपूर्वक संवाद करके अपनी व मेरी निःसंकोच परीक्षा कर सकता है। मैं उसका स्वागत करूंगा।** हाँ, उसे अपने सभी अहंकारों व दुराग्रहों को त्याग कर आना होगा। इसके साथ ही यह सचेत करना चाहूँगा कि **यदि समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से मुक्त कर दिया, तो देश में विषयलम्पटता की ऐसी आग लगेगी, जो अच्छे बालक-बालिकाओं को भी अपनी लपटों में समेट लेगी। इससे पारिवारिक ढांचा छिन्न भिन्न हो जायेगा। जब ये सारे समलैंगिक वृद्ध हो जायेंगे, तब इनकी सेवा कौन करेगा? विदेशों में तो सरकारें वृद्धाश्रम चला लेती हैं, यहाँ तो सड़-2 कर रोना और मरना ही होगा। सुशिक्षा व संस्कार भस्म हो जायेंगे। महिलाओं का जीवन और नरक बन जायेगा, नाना रोग फैलेंगे। सम्पूर्ण आकाश व मनस्तत्व में कामुकता की सूक्ष्म तरंगें नाना प्रकार के मानसिक व यौन रोगों को जन्म देंगी।** पारस्परिक सहमति के साथी न मिलने पर यौन अपराध बढ़ेंगे और यह इण्डिया अति निर्लज्ज पशुओं का देश हो जायेगा। जो महानुभाव आधुनिक मनोविज्ञान व पाश्चात्य शरीर विज्ञान के दम्भ में भारतीय ब्रह्मचर्य की शिक्षा पर व्यंग्य करते हैं, उन्हें पहले तो मैं दासता के आवरण से मुक्त होकर स्वतंत्र सोचने का परामर्श दूंगा और यदि वे दासतारूपी रोग को ही दवा समझे हों, तब मैं उन्हें प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा लिखित एवं **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क दिल्ली-110006** से प्रकाशित **'ब्रह्मचर्य सन्देश'** नामक पुस्तक पढ़ने का परामर्श दूंगां। इसमें विद्वान् लेखक ने विदेशी मानसिकता वालों के लिए अनेक विदेशी डॉक्टरों के महत्वपूर्ण वैज्ञानिक विचार दिए हैं।

यहाँ मैं अपने देश के कथित प्रबुद्ध व्यक्तित्वों से यह निवेदन करना चाहूंगा कि कुछ अनाड़ी व स्वच्छन्द बच्चे समलैंगिकता जैसी मानसिकता के शिकार बन जाएं एवं इसके पक्ष में सार्वजनिक रूप से खड़े दिखाई दें, यह बात तो समझ में आ सकती है, परन्तु जब देश के बड़े-2 कानूनविद्, पत्रकार, शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, सर्वोच्च न्यायालय जैसे देश के गौरवपूर्ण न्याय के स्थान पर तथा समाचार पत्रों एवं टी.वी. चैनलों पर इसके समर्थन में खुली और निर्लज्ज बहस करें, तब नैतिकता, सदाचार, संयम, धर्मशीलता आदि सद्गुणों को आश्रय देने वाला इस देश में कौन बचेगा? और जो भी सज्जन अपना मुख खोलेंगे, इस निर्लज्ज वातावरण में उनकी कौन सुनेगा। आज जो इण्डिया के प्रगतिशील माने जाने वाले महानुभाव समलैंगिकता की मांग करें, उन्हें स्वयं समलैंगिक विवाह करना चाहिए। पति-पत्नी को अपने-२ समलैंगिक साथी चुनने

तथा वर्तमान वैवाहिक सम्बंध जोड़ देने चाहिए। इसके साथ ही अपनी संतान का भी ऐसा ही विवाह कराना चाहिए।

अन्त में स्वतंत्रता के पक्षधरों को आर्य समाज के संस्थापक, समाज व धर्म के महान् संशोधक, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, वेदों के महान् उद्धारक, सम्पूर्ण मानवजाति के सर्वोच्च हितैषी, अखण्ड ब्रह्मचारी एवं महान् योगी **महर्षि दयानन्द सरस्वती** का सन्देश बताना चाहूंगा–

''सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।''

ध्यान रहे कि समलैंगिकता समाज का विषय है, इसमें स्वतंत्रता कदापि स्वीकार्य नहीं, यह हितकारी कर्म कदापि नहीं है, इस कारण भी इसमें स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। यह समाज के लिए तीव्र गति से फैलने वाला विष है, जिसे हर हाल में रोकना ही होगा।

मुझे आशा है कि सभी विवेकशील जन मेरे लेख पर गम्भीरता से विचार कर कुपथ को त्याग सुपथ पर चलने का व्रत लेंगे। ईश्वर सबको ऐसी सुबुद्धि व शक्ति प्रदान करे।

–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

जब अनेक साधु, ब्रह्मचारी, संन्यासी भी भ्रष्ट हो रहे हैं, तब कुछ लोगों को समलैंगिकता की निर्लज्ज मांग करने पर किसे आश्चर्य होगा? वस्तुत: मेरा भारत तो मर चुका है अब मैकाले का इण्डिया उस मरे हुए भारत के शव पर खड़े होकर निर्मम अट्टहास कर रहा है। सच्चे भारतीय कम ही बचे होंगे, यदि सच्चे भारतीय अधिक संख्या में यहाँ होते, तो समलैंगिता के पाप को वैधानिक मान्यता दिलाने की मांग के विरुद्ध देश में आन्दोलन कर रहे होते।

वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल जिला-जालोर

(राजस्थान) पिन- 343029

www.vaidicphysics.org Ph.: 02969 292103